ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

महाभारतकालीन विज्ञान और आजका विज्ञान : अनुबंध

नेहा भांडारकर, नागपूर

हमारी पुरी हयात में केवल एक भाषा में लिखा गया साहित्य समग्ररित्या पढ़ सके यह सोच केवल अशक्यप्राय लगती है । हर एक विषयपर हर व्यक्ति का समग्र ज्ञान अर्जित करना तथा समग्र ज्ञान को पढकर समझना ये बात शतप्रतिशत पुरा होनेकी संभावना कम ही होती है इस बात को हम नकार नही सकते । दुसरी संभावना यह भी होती है की हर वाचक,लेखक हरएक साहित्यकृतीपर, अपने अपने दृष्टीकोन से उसपर अभ्यास,परिक्षण तथा आलोचना करता है। आलोचना करते समय यह आलोचना लेखकनिष्ठ, आशयनिष्ठ, सौंदर्यनिष्ठ ऐसे अनेक आयाम में प्रसृत होती है ।

महाभारत पुराणग्रंथ एवं हमारे चारों वेद व सभी उपनिषदोंके बारे में भी ये सत्य हम झुठला नही सकते । महाभारत पुराणग्रंथ जो प्रारंभ में "यह जय नामका इतिहास है" इस नामसे लिखा गया था तथा हमारे वेद एवं उपनिषद शुरुवात में करिबन इ.स.पूर्व 1200 तक और किसी कारणवश या लिपी ना होने के कारण मौखिक थे, अपौरुषेय थे वह आज मुल संस्कृत भाषा से अन्य भाषाओंमे अनुवादित होते होते अपना मुल गहन अर्थ खो चुके है। इतनाही नही यह स्मार्तकालीन ज्ञान जैसे के वैसे प्रसृत हो रहा है इस बातकी शतप्रतिशत गवाही भी हम नही दे सकते। महाभारत के मुल श्लोकों मे बहोत बडे प्रमाण में प्रक्षिप्त भाग अंतर्भूत है। भांडारकर प्राच्यविद्या संशोधन केंद्र (BORI) पुणे के अद्यावत माहिती के अनुसार मुल श्लोकों की संख्या 8800 से 89136 तक आ पहुँची है यह बात इस बातकी पुष्टी करता है । (लेखक डॉ.रविंद्र शोभणे / महाभारताचा मुल्यवेध)

मुल महाभारत का वर्णन तथा प्रचलीत महाभारत का वर्णन इनमें अनेक योजन अंतर है। मुल कथा कई किस्से कहानियोंमें तबदील हुए है, या तो अनेक उपन्यासकारोंने इसका मुल रुपही बदल डाला। किंतु यह बात भी उतनीही सच है की जबतक कोई अज्ञात बातें अस्तित्व में है ही नही यह सिध्द नही होता तबतक उस बात कों स्विकार करते रहना अपरिहार्य है। महाभारत कालीन विज्ञान के बारे में भी यही कह सकते है।

हम जानते है की विज्ञान एवम् तकनिकी ज्ञान के विवेकपुर्ण उपयोग में एवम् मानव कल्याणार्थ तथा सृष्टी के हित में तत्वज्ञान अतिशय महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। यही विवेकपूर्ण दृष्टीकोन महाभारतकालमें विज्ञान के इस्तेमाल में रखा जाता था। विज्ञानविषयक एक अलग दृष्टीकोन पाँच महत्वपूर्ण मुद्योंके विवेचनव्दारा आपतक पहुँचाने का प्रयास इस लेखद्वारा करती हूँ।

कभीकभी कुछ मुल शब्दोंके अर्थ विभिन्न लेखकोंके साथ,विभिन्न विषयोंमें,विभिन्न अर्थ लेकर आज हमारे पढनें में आते रहते है इस संभावनाओको हम झुठला नही सकते। जैसे की ब्रह्म शब्द। जिसकी व्याप्ती की परिभाषा एक नही है। कभी अनाज को परब्रह्म कहा जाता है, कभी ईश्वर को। कभी ब्रह्म मतलब चैतन्य, उर्जा तो कभी अनु, इलेक्ट्रान, प्रोटॉन, न्युट्रॉन मतलब भी ब्रह्म समझा जाता है। कालानुरुप विज्ञान की खोज के साथसाथ शब्दोंके अर्थ, आशयों को नयेनये आयाम मिलते जा रहे है, तथा मिलते जायेंगे।

ये विवेचन करने की आवष्यकता इतनी ही है की अन्य पुराण ग्रंथोंपरही नहीं अपितु महाभारतपर भी लिखा गया साहित्य व्यक्तिसापेक्ष (लेखक अथवा अभ्यासक एवम् संशोधक सभी) बदलते गया हैं। फिरभी साडेतीन हजार वर्षसे भी पुराना महाभारतकालीन विज्ञान वैदिककाल के प्रगत होने का दावा करता है। वैदिक काल के विज्ञानकी आँखोंदेखी जानकारी हमें ना होनेके कारण आजके युगमें हम केवल उसके बारे में पढकर अंदाजही लगा सकते है। जो अंदाज संशोधनोव्दारा सिध्द किए गये हैं उसकी जानकारी भांडारकर प्राच्यविद्या संशोधन केंद्रो (BORI) जैसी संस्थाओं व्दारा हम पता कर सकते है। वेदों, उपनिषदों से एवम् अन्य ग्रंथो के आधारपर महाभारतकालिन विज्ञान प्रगत था क्या ?

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

उसकाल कें विज्ञान के इस्तमाल का तंत्रज्ञान, तकनिकी तरिके आजके विज्ञान जैसे थे या उससे भी प्रगत थे इसपर मंथन करना यही इस लेख का मूल उद्देश है।

"सत्य कभी तार्किक नही होता परंतु तर्क सत्य हो सकते हैं"। इस वाक्यपर मेरे इस लेख के पाँचो मुद्योंका आशय निर्भर है।

मैं शतप्रतिशत विज्ञाननिष्ठ हूँ, मैं इक्कीसवी सदी की स्त्री हूँ, ऐसा मान भी लेती हूँ, तो भी आजका विज्ञान ही सत्य, बाकी सब मिथ्या ऐसा दुराग्रह मैं नही करना चाहूँगी। किसी बात की केवल जानकारी मिलना मतलब ज्ञान हैं। तो उस जानकारी के बारे में विशेष ज्ञान प्राप्त करना विज्ञान कहलाता है, फिर वह जानकारी किसीभी विषयपर आधारित हो। इस बात के अनुसार सभी ज्ञानकी शाखाएँ "विज्ञान" इस एकही संज्ञा में समा जाती हैं।

1 मेरे विचारमंथन का पहिला मुद्या है–द्रौपदी वस्त्रहरण या चिरहरण की बात

योगशास्त्र विज्ञानशाखा का एक नाम है। "योगश्चित वृत्ती निषेधः।" योग मतलब चित्त वृत्तीका निरोध यह हमारा पतंजली योगदर्शन हमें सिखाता है। यहाँ बुध्दी तथा हमारे दिमाख (brian) का इस्तेमाल नही चलता हैं क्यूंकी योग का संधान तो आत्मा (soul) से होता है यह हमारा दर्शनाशास्त्र हमे सिखाता है। दुसरी बात शांकरभाष्य मे से छः अष्टकम के अनुसार आठ ऐश्वर्य बताए गये है। अणिमा, गरिमा, लघिमा, महिमा, प्राप्ती, प्राकाम्य, ईशत्व और वशित्व। इन आठ ऐश्वर्य सिध्दी के अनुसारही प्राकाम्य तथा ईशत्व इन दो महासिध्दी की मदद से भगवान श्रीकृष्ण द्रौपदी चिरहरण के समय उसकी सहायता करने प्रकट हुए थे इस तरह का विचार मै आपके समक्ष रखना चाहूँगी।

अब यह प्राकाम्य और ईशत्व क्या होता है देखते है। हम अपने मन की बात दुसरो तक पहूचा सकते है या दुसरो के मन की बात भी कभी कभी जान पाते है। मन के उडान की बात भी हम सब जानते ही है। अगर अतितीव्रताके साथ हम अपने प्रिय व्यक्ति को याद कर ले तो वह व्यक्तिभी हमे प्रतिसाद के तौरपर याद करता है। जिसे आज के विज्ञान में हम टेलीपॅथी कहते है। और पॅरासायकोलॉजी भी इस बात का समर्थन करती है।

हमारे मन की बात जिसे खुद होकर, बताते है वह मित्र कहलाता है तथा हमारे मनकी बात जो खुद ही जान जाता है उसे हम सखा कहते है। यही सखा सखी का रिश्ता था द्रौपदी और श्रीकृष्ण के बींच में। मनकी बात समझनेवाली कृष्ण की सखी थी द्रौपदी। इसलिए चिरहरण के समय जब द्रौपदीने श्रीकृष्ण को उसकी सहायता हेतु पुकारा तो उसकी दिलसे पुरी तीव्रता के साथ निकली हुअी चिख श्रीकृष्ण को सुनाई दी। अब ऐसा क्युँ हुआ था वह भी जान लेते है। प्रत्येक इंद्रियोंका उत्पत्ती स्थान पंचमहाभुतों मे है यह बात भारतही नही अमेरिका जैसे अन्य प्रगत राष्ट्र भी मान चुके है। गर्भधारणाके समय माँ के उदरमे भ्रुण के निर्माण के समय उसके कान की निर्मिती पंचमहाभुतों के आकाशतत्व से बनती है। इसी आकाशतत्व के कारण द्रौपदी की चीख श्रीकृष्ण के कान तक अपने मनके व्दारा (टेलीपॅथी) सुनायी दी। द्रौपदीका स्वयंकेंद्रीत मन श्रीकृष्ण के वैश्विक मनके साथ संपर्क कर पाया। अन्यथा जरासंघके साथ युध्द मे व्यस्त श्रीकृष्ण भला रणांगण छोडकर द्रौपदीको वस्त्र देने कैसे पहूँच पाते? यही है उस जमाने का इशित्व और प्राकाम्य सिध्दी का विज्ञान।

भक्त की पुकार सुनकर मनसे भक्त के पास पहुँचना इसी ईश्वरी देन के कारण श्रीकृष्ण को "स्मर्तुगामी" कहा जाता था। वह अपने आवाहक के पास उनके करुण तथा विव्हल आवाहनव्दारा केवल मनसे पहूँच सकते थे ना के प्रत्यक्ष शरीर से।

द्रौपदी वस्त्रहरण की तरफ इस विज्ञान की नजरसे देखे तो उसकाल के इशीत्व और प्राकाम्य महासिध्दी का मतलब योगशास्त्र के उस वक्त का प्रगत होने का एक बेहतरीन उदाहरण है जो आज की हमारी पॅरासायकोलॉजी के टेलीपॅथी से मेल खाता हुआ विज्ञान भी हैं।

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

एक दुसरी आशंका भी मन मे आती है वो यह की उस जमाने में राक्षणगणों को कालीविद्या, अधोरीविद्या, वशीकरणविद्या जैसी कई अमानवीय विज्ञाए अवगत थी। द्रौपदी के मायके का एक कुल राक्षस जातीका था। उस हिसाब से देखा जाए तो दौप्रदी कों आज के संम्मोहन विद्या जैसी कोई विद्या अवगत हो जिसकी मदत से वस्त्रहरण के समय पुरी कुरुसभा में उपस्थित व्यक्तियों को द्रौपदी को श्रीकृष्ण द्वारा वस्त्र की आपूर्ती की जाने का आभास हुआ हो।

केवल कल्पनाविलास की बातों से विकास के द्वार बंद होते है यह जानती हूँ। फिर भी उस जमाने में उपरोक्त बातों का प्रयोग संभव होगा इस बात को नकारा नहीं जा सकता।

योगशास्त्र में उपर बतायी गई अणिमा, गरिमा, लघिमा, जैसी" छः अष्टकम" योगसिध्दी आज अस्तित्व में नही है। क्युँ की राक्षसों का खुदको आकार से छोटा बडा करना, गायब होना, प्रकट होना यह सब फँटसी बातोंपर हम आज विश्वास नही कर पाते। पर यही बातें आज हम ॲनिमेशन द्वारा, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमोंव्दारा, आकृतीयोंकों आकार देकर, आकार बदलकर कर सखते है। आज कल तो लगता है की डब्लू.डब्लू.एफ. (WWF) मे दिखाए जानेवाले किसी बॉडीबिल्डर व अंगप्रदर्शन करने हेतू की गयी क्रियाओंद्वारा ही अणिमा, गरिमा, लघिमा जैसी सिध्दीयोंको खुली नजर से प्रत्यक्ष देख पाते है। पर इसकी तुलना उन योगीसिध्दी के साथ नही हो सकती।

यु.के. में एक डायनॅमो स्टिव्हन नामक युवक आजभी अपनी सिध्दीके आधारपर समुंदर के पृष्ठभागपर कितने कितने मिटर जमीन की सतह की तरह चल सकता है। डिस्कव्हरी चॅनल उसका सिधा प्रसारण भी दिखाती है। इसका मतलब योगशास्त्र में बतलायी गयी पुरातन सिध्दी अवगत होने वाली व्यक्ती आजभी अस्तित्वमें है और योगशास्त्र में निहीत विज्ञान के प्रयोग का एक बेहतरीन और महत्वपूर्ण सुराग है। किंतु यह युवक भारत का नही है, जब की ये शास्त्र भारत का अपना है।

आज के विज्ञान को भलीभाँती पुर्णरुपसे न समझा हुआ सत्य यही आजके योगशास्त्र का रुप बचा है। आजभी हमें योगशास्त्र का समझा हुआ सत्य सिमीत है। अन्यथा प्राकाम्य योगव्दारा आजभी श्रीकृष्ण की तरह वस्त्र की आपूर्ती की जाती या अल्लाउद्दीन के दिये से मनचाही चिजे देनेवाला जीन अस्तित्व में होता।

प्राचीन पुरानग्रंथो वा अन्य वाङ्मयों के जरिए प्रकट होनेवाली संभावनाएँ आज के युगमें सिध्द करना असभंव तो है पर वर्तमान और भूतकाल को को–रिलेट करके नयी संभाव्यताओंको हम नकार नही सकते।

2 दुसरी बात पर मैं मंथन करना चाहूँगी वह है गांधारी पुत्र

गांधारी के 101 बच्चे थे जिनमें 100 पुत्र और एक पुत्री थी, यह बात तो सभीको विदीत है। किंतु भांडारकर प्राच्यविद्या संशोधन केंद्र पुणे व्दारा अद्यावत माहिती के अनुसार गांधारी के केवल 14 पुत्र उसके अपने थे बाकी सभी बचे हुए दासीपुत्र थे यह बात संशोधित की गयी है। गांधारी गांधार से थी और उस जमाने में गांधार की स्त्रिया "बहुप्रसवा" करके मशहूर थी मतलब अनेक बच्चे पैदा करने का सामर्थ्य रखनेवाली। फिर भी एक स्त्री को कईबार जुडवा या तिडवा बच्चे होनेके बाद भी उसका मेनोपॉज आनेतक 101 बच्चे पैदा होना यह आज मे भी असंभव बात है। और उस जमाने की समाजव्यवस्था को देखनेके बाद धृतराष्ट्र को प्रत्यक्ष संभोग से दासीयो व्दारा पुत्रप्राप्ती हो सकती है यह बात भी सत्य मानकर चलते है। तो 101 दासीपुत्र राजपुत्रो की हैसीयतसे राजभवनमें कैसे रह सकते है, अगर वह दासीपुत्र है तो फिर यह 101 पुत्रोंवाली बात कितनी सच कितनी झुठ हो सकती है?

और एक बातपर गौर करना चाहूँगी की महाभारत में एक आख्याखिका भी बहोत प्रसिध्द है। यह महाभारत का प्रक्षिप्त भाग है की नही मुझे जानकारी नही। किंतु ईशावस्य उपनिषदो में गांधारी को महर्षी व्यासने एक मंत्र दिया था। गांधारी को गर्भपात होने के बाद महर्षी व्यासने गांधारी के गर्भाशयसे

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

बाहर पडी हुअी मांसपेशीपर जलसिंचन करके उसके सौ टुकडे किए और उन टुकडोंकों (घृत) घी मे भरे हुए पात्र में रखा और मंत्रोंव्दारा सौ पुत्र तथा एक पुत्री का जन्म हुआ।....यह वो आख्यायिका है।

आज इस आख्यायिका पर मन सहमत नही हो पाता इसलिए उस वक्त के व्यास के विज्ञान को मैं इस युग के आजके विज्ञान की नजर से देखना चाहती हूँ।

उस जमाने में बल्कि उससे भी पूर्व, रामायण के जमाने से मतलब करिबन पाच छह हजार वर्ष पूर्व से आयुर्वेद प्रगत था। रावण को तो आयुर्वेद का जनक भी कहा जाता हैं। तो उस जमाने के प्रगत विज्ञान के अनुसार महर्षी व्यास ने अपनाए हुए तंत्र को मै आजके आर्टिफिशल इन्सीमीनेशन या टेस्टटयुंबेबी के तंत्र के साथ जोडना चाहूँगी। महर्षी व्यास के मंत्र मतलब उनकी तकनिकी, उनका तंत्रज्ञान और घी से भरे हुए, पात्र मतलब पुरुषविर्य से संबंधित तथ्य होगा यह समझकर चलते है। तथा मांसपेशीके टुकडे मतलब "स्त्रीबीज" समझते है जो बाद में फलित हुए होंगे। अथवा गर्भधारणा हेतू (conceive or fertilise) अलगअलग दासीयोंके गर्भाशय में छोड दिए होंगे जिसे हम आज सरोगसी कहते है। यहीं कारण हो सकता है की महाभारत के धर्मयुध्द के समय सभी कौरवोंकी आयु लगभग समान रही हो।

आजके विज्ञान के अनुसार डी.एन.ए. (DNA) सजीव सृष्टीके जन्मका मूलाधार है। और उस जमाने में भी पूर्ण की ओर से पूर्ण की निर्मिती का वर्णन वेदों एवम् उपनिषदों में किया गया हैं।

ॐ पूर्ण मदः पूर्ण इदं पूर्णात्पूर्णम्युच्यते

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवाशिष्यंता

इस मंगलचरणानुसार पूर्ण से पूर्ण निर्माण होता हैं एवम् पूर्ण से पूर्ण घटाया जाए तो पूर्ण ही बाकी बचता है। महर्षी व्यास एवम् गांधारी पूत्रों के जन्म की आख्यायिका के पिछे यह कारण हो सकता है। हमें विदीत है की आज डी.एन.ए. (DNA) में से लिए हुए एक रेणू के एक पेशी से अनेक पूर्ण पेशीओंकी उत्पत्ती सहजता से संभव है। एक पेशीके अगर बिचोबिच दो समान भाग किए गये तो पेशी के केंद्रको के भी दो समान भाग होते है और ये दोनो केंद्रक फिरसे नयी पूर्ण दो पेशीयों की निर्मिती कर सकते है। इसका मतलब घटाने से "पूर्णस्य पूर्णमादाय" याने की बचती है वो भी एक पूर्ण पेशी ही, यह बात सिध्द होती है। महर्षी व्यासके सौ पात्रों में रखी मांसपेशीयों के पिछे महर्षी व्यास के तकनिक की यही भूमिका छीपी रही हो। जिसका संबंध आजके विज्ञान से मिलता जुलता हो। एक स्वतंत्र जीव स्वतंत्ररित्या निर्माण करने में वह कालभी यशस्वी था यह बात उपरोक्त मंगलचरणसे स्पष्ट होती है। हां, यह हो सकता है की इस तरह का विज्ञान सरेआम पौरुजन, आमआदमीके लिए सरेआम खुला ना होते हुअे कुछ खास प्रसंग, घटनाओंके लिए विशेषतः राष्ट्रहीतमें राजवंशोंके लिए सकारात्मक परिणामों तहे सशक्त कारणोंमे ही इस्तेमाल किया जाता हो और जिसके पिछे केवल और केवल विवेकवादी दृष्टीकोन ही हो जो हमारे भारतीय तत्वज्ञान कां एक अहम् हिस्सा है।

तैतीरीय उपनिषद अनुवाक 11–"प्रजातंतू मा व्यवच्छेसी" इस चरणानुसार "प्रजातंतू का विच्छेद मत कर" यह बात से हमें इतना तो ज्ञान होता ही है की ॲबॉर्शन या गर्भपात मत करो। ऐसा संदेश या उपदेश अधिप्रजम संततीज्ञान शाखामें तैतीर ऋषी जब करते है तो हम उपनिषद के मंगलचरण में "प्रजतंतू" यह शब्द गुणसूत्राो के लिए या जीन/जनुक के लिए इस्तमाल किया गया है ऐसा मानकर चलते है। वैदीकयुग मे प्रजननशास्त्रकी पााचवी शाखा,मैने उपरोक्त किए हुए विवेचन की पुष्टी ही करता है ऐसा मुझे लगता है। आज यह शास्त्र टेस्टट्युब बेबी, सरोगसी, क्लोनिंग जैसे और स्टेमसेल थेरपी जैसे नएनए नामसे अलग अलग तरीके से आविष्कारीत होते रहे है।

3) विवेचनका तिसरा मुद्या है सुदर्शनचक्र

अभी सुदर्शनचक्र के बारे में देखते है।

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

अथर्वशीर्ष यह एक सिध्द मंत्रस्त्रोत है। जिसमें "ईदमर्विशिर्ष अशिष्याय न देयम्"। मतलब अविचारी व्यक्तीको यह दिव्य स्तोत्र ना दिया जाए ऐसा कहा गया है। अमरावती (महाराष्ट्र) मे स्थित श्री श्रीरंग हिर्लेकर जी ने मेरे साथ हुए वार्तालाप में इस बात की पुष्टी की थी की आजके तिन मिती के पार जाके आईनस्टाईन के विचारोंसे प्रेरित चौथी मिती याने की "काल" की कल्पना अगर प्रत्यक्ष में साकार होती है तो महाभारतकालीन विज्ञान आज के विज्ञान से कई गुणा प्रगत था जो राष्ट्र सुरक्षा हेतु गुप्त रखा गया था यह बात साबित हो सकती है। और उस विद्या को प्राप्त करनेलायक कोई शिष्य ना होने के कारण शिष्योंद्वारा उसका सर्क्यूलेशन आगे नही हो सका और ऐसी कई अनेक पुरातन विद्याएँ लुप्त होती गयी यह वास्तव है। और दुसरी संभावना यह भी हो सकती है की इस तरह की विद्या किसी गलत हाथ में जाकर उसका दुरुपयोग न हो इस बात के डर से भी ऐसी विद्याएँ लुप्त हो चुकी हो। मर्यादित ज्ञात विषयोंके परे अज्ञात के क्षितिज तक जिसकी पहूँच हो वही ज्ञानी कहलाता है और महाभारत कालीन ऋषी, मुनी ऐसेही ज्ञानी थे। जिनमें श्रीकृष्ण का भी नाम का उल्लेख करना यहापर मै अनिवार्य समझती हूँ।

यदिर्चिमद्यदणुभ्योऽणुच यस्मिन लोकनिहीता लोकिनश्च.....

इस श्लोकानुसार उन दिनो ऋषीमुनीयों को अणू, परमाणू का ज्ञान था। उस ज्ञान का वो बडी कुशलतासे ब्रह्मास्त्र, पाशुपतास्त्र इ. अनेक अस्त्र बनाने हेतू उपयोग करते थे। साडेतीन हजार वर्षपूर्व श्रीकृष्णने भी पानी के विघटनसे अणू उर्जा तयार करने का उल्लेख है। पिछले चार साल पूर्व एक पत्रपरिषद मे लखनौ के स्वामी सनातन श्री जी महाराजने भी इस बात का प्रतिपादन किया था।

मराठी उपन्यासकार शिवाजी सावंत के युगंधर मे तथ्य पर बनाई गयी कहानी ऐसी है की अर्बुद पर्वत के मालविकानगरी के राजा शाल्वके पास सौभ नामक विमान (हवाई जहाज) था। जिसे युध्द मे श्रीकृष्णने सुदर्शनचक्रद्वारा नष्ट कर दिया था। इतने बडे हवाई जहाज के छोटे छोटे टुकडे समुंदर मे बिखरे थे। यह हवाई जहाज स्थापत्य विशारद मयासूर ने बनवाया था। इसका मतलब की सूदर्शनचक्र आजके अक्षांश रेखांश के आधार पर इच्छित स्थलपर प्रक्षेपण करनेवाला तंत्रज्ञान हो सकता है जो आजके मिसाईल अथवा तत्सम तंत्रज्ञान जैसा ही संहार कर सकता हो । धार्मिक भावना को थोडी देर बाजू में रखकर यह विचार किया जाए तो बुमरँग जो आजभी अनेक देशो मे विस्मयकारी तथा रोचक खेल के तौरपर अस्तित्व मे है । प्रक्षेपण के बाद बुमरँग की तरह ही (बल्की अतिप्रगत तथा शक्तिशाली) तर्जनी पर वापस श्रीकृष्ण के पास आनेवाला सुदर्शनचक्र प्रक्षेपण की स्थिती, लय गतीका गणीत तथा भौतिक सूत्र प्रगत होने का महत्वपूर्ण और बेमिसाल उदाहरण है।

वामनपुराण के अनुसार "च" मतलब चलन, "क्र" मतलब क्रिया = चक्र, चक्र के छह आरे छह ऋतूओंको दर्शाते है। तथा ऋग्वेदामें बारा आरे बारा राशी; संक्षीप्त में कालचक्र ही दर्शाते हैं। यह चक्र प्रक्षेपण के समय बहोत बडा तथा बहोत छोटा होने का कारण योगशास्त्र अणोरणियान तथा महतोमहियान के नाम से जाना जाता हैं। बिलकूल उसी तरह जिस तरह दिवाली में हम पटाकों में जमीनचक्र जलाते हैं। जो अती तीव्र गती से घुमने के कारण उसकी आभासे मूलआकार से बहोत बडा प्रतीत होता है तथा रुकते समय संथ (कम) गतीके कारण छोटा होते होते मूलआकार में आकर रुकता हैं।

जो बात अस्तित्व में ही नही उसे खोजना याने की "इन्व्हेंशन" तथा अस्तित्व में होनेवाली बातपर नये दृष्टीकोनसे गौर करना याने "डिस्कव्हरी"... बस यही फरक है आजके और महाभारत कालीन विज्ञान में। उस वक्त सुदर्शनचक्र को भी बल और गती के सहारे चौथी मिती, जिसे हम "काल" कहते है, (लबांई, चौडाई, उँचाई यह तीन मिती के बादवाली)चौथी मिती रही होंगी। या तो सापेक्षता सिध्दांत के जैसे सिध्दांत उस जमाने में भी रह चुके होंगे जिस जानकारी से हम आजभी अज्ञात हैं। परंतु जिसको हम आजके विज्ञान से जोडने की चेष्टा कर सकते है। यह विवेचन किए गए मेरे विचार उच्च वैचारिक स्तर पर किए गये घटनाओंका एवम् बौध्दिक विचारोंके आंदोलन का सुसूत्रीकरण है यह बात कहनेमें कोई अतिशयोक्ती नही होगी ऐसा मुझे लगता है।

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

4) इस लेख के विवेचन में चौथा मुद्या है वरदान और शाप

महाभारत यह वैदिक काल समझा जाता है। उस वक्त की सभ्यता और संस्कृतिपर ऋग्वेद,सामवेद,यजुर्वेद और अथर्ववेद इन सबका प्रभाव अत्यंत भारी था। सृष्टी से संबधीत निसर्ग ऋचाएँ एवम् निसर्ग तथा सृष्टीसे तादात्म्य (hormony) रखने हेतू अनेक संसाधन घटना प्रकार उस वक्त प्रचलित थे। निसर्ग अनेकानेक प्रचंड शक्ती का सुप्त केंद्र है इस भावनासे प्रेरित होकर निसर्गपूजा की जाती थी। जैसे की वृक्ष, नदी, पर्बत, अरण्य, पर्जन्य, आकाश, अग्नी, वरुण इत्यादी।

जिस व्यक्ती की इच्छाशक्ती अतिप्रबल होती थी वह व्यक्ति निसर्ग के साथ अपनी हार्मनी बनाकर निसर्गसे सिध्दी प्राप्त कर सकता था। इसी कारण प्रसन्न होकर शुभचिंतन के जरिए वरदान देना अथवा क्रोधीत होकर शाप देना यह कला उस व्यक्तिकी (उस ज्ञानी व्यक्तीकों जिसका क्षितीज अज्ञात को जानता हो) (तिसरा मुद्या देखिए)इच्छाशक्ती तथा मूल (उपजत) प्रतिभा को तपस्या के जरिए खादपानी डालके उसका संवर्धन करती थी।

इस बात को हम सिध्दी प्राप्त करना कहते है। किसी भी तप से मानसिक बल तथा तेज मे बुध्दी होती है। इसे वाचासिध्दी कहते है।

पंतजली के साधनपाद के अनुसार "सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्" जो बोला वह सच होता है। पंचमहाभुतोंवर जैसे की पृथ्वी, जल, वायू, तेज और आकाशपर काबू पाना तथा उनका उपयोग करके फलप्राप्ती करके शाप तथा वर को फलद्रुप किया जाता था।

ऐसा भी कहा जाता था की मंत्रोंव्दारा,यज्ञोंव्दारा अनुष्ठान करके पर्जन्यवृष्टी तथा शास्त्रशुध्द रागोपर आधारीत संगती से दीप प्रज्वलीत करना, बारीश गिराना यह सब उस समय सिध्दी का ही प्रकार माना जाता था।

आजभी विज्ञान के अनेक शाखाओ मे शास्त्रशुध्द अभ्यास में positive response of nature याने की निसर्ग का सकारात्मक समर्थन यह तत्व (ज्ञान) वरदान–शाप संकल्पना की पुष्टी करता है । जेरी और ईस्टर हिक्स इस लेखकजोडीने इंग्रजी मे लिखी हुअी किताब "आस्क ॲन्ड इट इज गिव्हन" मे अनेक घटनाओ का उदाहरण देकर यह तत्ववाद तथा वरशाप की संकल्पना लिखी गयी है । शुध्द तथा निर्मल मन से निसर्ग से मांगी हुअी चीज हमारे इच्छाशक्ति को तीव्र प्रबल बनाकर पायी जा सकती है। आजका विज्ञान वरदान तथा शाप के इसी संकल्पना की पुष्टी करता है। अर्थात शाप यह प्रकार विनाशकारी या विध्वंस को बढावा देनेवाला होता है। इसलिए उसे नकारात्मक इच्छाशक्ती में माना जाता है।

बचपने मे माँ और दादी कहती थी की हमेशा अच्छा अच्छा, शुभशुभ बोलना चाहिए। क्युँ की अपने घरके उपरसे आकाश मे भगवान चक्कर मारते रहते है तथा तथास्तु–तथास्तु कहते फिरते है।

साथीयो यह दुसरा तिसरा कुछ भी नही, बस निसर्ग का सकारात्मक समर्थन(positive response of nature) ही है यह बात अभी समझ मे आती है।

5) इस लेख के विवेचन का पाँचवा एवम् आखरी मुद्या है "आकाशवाणी"

महाभारत में आकाशवाणी होने की अनेक घटनाएँ है। उसमें सबसे महत्वपूर्ण और सामान्यजन को पता हो ऐसी घटना है श्रीकृष्ण जन्म के समय कंस से सुनी हुअी उसके मृत्यू की भविष्यवाणी। कुछ आकशवाणी मंगलकामनाओंके लिए भी हुअी थी इसका वर्णन रामायण तथा महाभारत में भी आता हैं। आकाशवाणी होने की जगह और भौगोलिक स्थिती हरवक्त अलगअलग ही रह चुकी हैं। कही जगह गंधर्व, यक्ष, किन्नर इनके व्दारा ध्वनिक्षेपण करना या किसी घटनापर किसी को मंगलकामना करने हेतु संदेश भेजना ऐसा आकाशवाणी का स्वरुप रहा होगा ऐसा वर्णन आज अभ्यासकों व्दारा मिलता है। उस

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

जमाने में रेडीओ वेव्हज तथा इलेक्ट्रीसीटी जैसे संसाधनोंका उपयोग किया जाना असंभव होने के कारण आजके तंत्र के बने स्पीकर नही होते होंगे। फिर भी उर्जा (energy) नामके भौतिकशास्त्रीय वैज्ञानिक तत्व के आधार पर यह घटना हो सकती क्या ऐसा सोचनेपर मै विवश होती हूँ। उर्जा कभीभी ना खतम होनेवाली चीज है। उर्जा हमेशा परिवर्तनशील (Transformative) होती है। फिर वह सौरउर्जा हो या पवनउर्जा। तो उस समय भी तत्सम उर्जा का कोई प्रकार विकसित हुआ रहा होगा जो आकाशवाणी के रुप में आवाज को ध्वनीत कर सकता हो। उसका एक नैसर्गिक उदाहरण मेघो, की गडगडाहट पृथ्वीपर सुनना।

दुसरी एक नैसर्गिक संभावना है जो भौगोलिक पार्श्वभूमीपर आधारित है। जैसे हम Eco sound या आवाज प्रतीध्वनीत होना कहते है। उदाहरण के तौरपर गोवलकोंडा का किल्ला–जहॉ प्रवेशव्दारपर निचे बजायी हुअी ताली किलेके दुसरे हिस्से में सुनायी देती है। अथवा दो आमनेसामने होनेवाली पहाडी से एक पहाडी से दी गयी आवाज दुसरी पहाडी मे Eco होकर गुंज उठती है। महाबलेश्वर ब्रह्मारण्य (महाराष्ट्र) मे स्थित इकोपॉईट इसका एक उदाहरण है। और नाजाने और कितनी जगह है आकाशवाणी के गुढ रहस्य का पर्दाफाश कर सकती है।

कभीकभी कंस जैसे दुष्टों को सबक सिखाने हेतू या भविष्यवाणी के जरिए डराने–धमकाने हेतु या किसीको खुष करने, मंगलकामनाएँ देने हेतू इस आकाशीय, खगोलीय आकाशवाणी का प्रयोजन किसी व्यक्ति द्वारा ही हुआ करता होगा। पर वो कौन और किस तरह करता था यह रहस्य ही है। माना के उस जमाने मे यक्ष, गंधर्व, किन्नर शापित देवताओंके रुप मे संदेशवाहन का कार्य करते थे तो जाहीर है की हर आकाशवाणी यही लोग अलगअलग जगहपर करते होंगे। किंतु उनके रहनेका स्थान देवलोक के उसपार हिमालय के आसपासही (हिमवर्त/आर्यवर्त) या तो किसी सरोवर किनारे ऐसा ही माना जाता है। फिर देवलोग से मानवलोग तक कोसों दूर आकर तुरंत उचित, और सहीसमय आकाशवाणी करना कैसे संभव रहा होगा यह भी एक अनसुलझा प्रश्न है। इसलिए जहॉजहॉ आकाशवाणी हुअी थी वहॉवहॉ या कुछ महत्वपूर्ण जगहकी उस वक्तकी भौगोलिक परिस्थिती की जानकारी एवम् वहॉ की नैसर्गिक सुप्त शक्तियों से भरी हुअी भौगोलिक पार्श्वभूमी का अभ्यास तथा अध्ययन किया जाए तो आकाशवाणी का रहस्य सुलझ सकता है। किंतु ये जगह अभी 3 से 5 हजार साल पूर्व भौगोलिक प्रदेश, भुस्खलन, भुचाल, त्सुनामी जैसे नैसर्गिक प्रकोप से अपनी पूर्व स्थितीमें नही है (व्दारका भी पूरी तरह समंदर में डूब चुकी है) यह भी इस संशोधनकी खोज में आनेवाली मर्यादा है।

आज हमारी प्रज्ञादृष्टी, इंद्रियक्षमता, तपस्या उतनी प्रभावशाली नही रही है, की हम सब उसकाल के विज्ञान को महसूस कर सके। गतकालीन विज्ञान के साथ जी सके। सात–आठ साल पूर्व आयी हुयी त्सुनामी की आहट जंगली जमातीके लोगोंको लग चुकी थी। पशुपक्षीयोंकी तरह वह भी किसी सुरक्षित जगह पहिलेही स्थानांतरित हो चुके थे। और हमारा आजका विज्ञान कुछ भी नही कर पाया था। यही है प्राचीन विज्ञान की महती।

प्राचीन विज्ञान का उपयोग केवल विवेकबुध्दीसेही होता था इसलिए विनाशकारी नही था। मेरे उपरोक्त सभी विचार केवल मेरे चिंतन का एक हिस्सा है। यह कोई संशोधन नही। केवल अभ्यास से सिध्द की हुअी बाते है,इस बात का मै खुलासा करना चाहूँगी। अपितु मेरे इस विवेचनपर गौर करके अभ्यासकोंव्दारा या संशोधकोव्दारा हम इन बातों का और भी खुलासा कर सकनेमे सक्षम और कामयाब हो सकते है।

नेहा भांडारकर, नागपूर
92, अ,फ्रेन्डस् कॉलनी,
काटोल रोड, नागपूर–440013
मो. 9823746521

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)